जाट बनाम मीडिया (36)
-पूर्व कमांडेंट हवा सिंह सांगवान

मीडिया प्रचार का सशक्त माध्यम रहा है चाहे कोई भी समय या काल हो । समय के साथ-साथ इसका स्वरूप भी बदल रहा है । प्राचीन में चारण, भाट और जोगी आदि मीडिया के तीन सशक्त स्तम्भ थे । इसके अतिरिक्त स्थानीय जागे होते थे जो अपनी पोथियों में अपनी शैली अनुसार विभिन्न जातियों व गौत्रों की वंशावलियां दर्ज करते थे । भाटों की पोथियों का तो अभी तक उल्लेख किया जाता है । इनका लिखने और दर्ज करने का तरीका अपनी मर्जी और मनमानी हुआ करता था और ये लोग उसी की प्रशंसा किया करते थे जो इन्हें बदले में भेंट देता था । इसी कारण यह कहावत प्रचलित हुई कि जिसकी खावै बाकली उसके गावै गीत अर्थात् जैसा जो इन्हें देता था उसके लिए वैसा ही ये लिखते थे और गाते थे । इनके द्वारा दर्ज की गई ऐतिहासिक घटनाएं गद्य और पद्य दोनों में ही होती थी जिसे चारण और जोगी गाया करते थे । लेकिन जोगियों का एक ही वाद्य सारंगी होता था जिस पर ये घटनाओं को पद्य में गाते थे जिसका उद्देश्य केवल लोगों का मनोरंजन करना होता था । इनकी संस्कृति किसी काले को सफेद व किसी सफेद को काला करना नहीं थी अर्थात् जोगी पक्षपात रहित थे । जब सातवीं सदी के अंत में माऊंट आबू पर्वत पर 'बृहत् यज्ञ' में अग्निकुण्ड से राजपूत जाति की उत्पत्ति की घोषणा की तो ब्राह्मणवाद ने इसे क्षत्रिय जाति स्थापित करने के लिए इसका धुआंधार प्रचार किया और इसकी जिम्मेवारी ब्राह्मणी मीडिया ने ली । इसी को इस मीडिया ने अपनी लेखनी का साधन बनाया जिसे चारण और भाटों ने घूम-घूमकर गाया । जबकि यही मीडिया पहले प्रचार करता रहा कि परशुराम ने क्षत्रियों का सर्वनाश कर दिया था और इसी गुणगान के साथ ब्राह्मणवादी लोग राजपूत राजाओं के पुरोहित बन गए जबकि इस जाति का उल्लेख किसी भी प्राचीन ग्रंथ में नहीं है । इन लोगों ने राजपूत राजाओं के पुरोहित होकर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए इन्हें आपस में इतना लड़ाया कि वे कभी भी मुगलों के विरोध में कोई भी बड़ी लड़ाई नहीं जीत पाए और न ही अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ पाए लेकिन फिर भी इन्होंने हल्दी घाटी जैसी छोटी लड़ाई को भी, जिसमें केवल महाराणा प्रताप के 59 सैनिक मारे गए थे तथा यह लड़ाई केवल ढाई घण्टे चली थी, जो भी हो इन्होंने राजपूत जाति की वीरता का धुआंधार प्रचार किया क्योंकि राजपूत राजा इन्हें एक दूसरे से बढ़कर दान दक्षिणा दिया करते थे जबकि जाटों में इस प्रकार के इतिहास लिखवाने की कोई भावना नहीं थी । इसी का उदाहरण है कि महाराजा सूरजमल तथा महाराजा रणजीत सिंह ने मुगलों को पीट-पीटकर अपनी रियासतों की स्थापना की जो अधिकतर राजपूत रियासतों से बड़ी रियासतें थी और इन्होंने अपने जीवन में कभी कोई लड़ाई नहीं हारी । इसी कारण इन महान राजाओं का नाम भारतीय इतिहास से गायब है । इसका मुख्य कारण जाटों का स्वभाव था कि वे खिला-पिलाकर इतिहास लिखवाने में विश्वास नहीं रखता था क्योंकि उनका विश्वास था कि वे इतिहास बनाते हैं, लिखवाते नहीं ।

जब आधुनिक युग आया तो राजपूतों की अधिकतर रियासतें कमजोर पड़ चुकी थी या समाप्त हो चुकी थी जिस कारण ये पुरोहितवाद और ब्राह्मणवाद ढीला पड़ने लगे तो इन्होंने इस युग में समाचार पत्र-पत्रिकाओं का सहारा लिया जो मीडिया के स्तम्भ बने । जो जातियां पहले से ही शिक्षित थी जैसे कि कायस्थ, अरोड़ा खत्री आदि उनको भी इन्होंने अपने साथ लगा लिया और समय आते-आते यह इनका पेशा बन गया । जब एक पेशा हो गया तो आपस में भाईचारा भी होना था । इस प्रकार इन जातियों ने इस मीडिया पर अपना पूर्ण प्रभुत्व कर लिया और राजपूत जाति को पीछे छोड़कर भुला दिया ।

जाटों का अपना पुराना अंग्रेजी अखबार दी ट्रिब्यून है जो पंजाब के गांव मजीठा के रहने वाले जाट सिख सरदार दयालसिंह मजीठिया ने इसकी स्थापना सन् 1881 में की । जब बाद में उसके वंशज इसे नहीं संभाल पाए तो एक ट्रस्ट बना दिया गया जिस पर धीरे-धीरे हिन्दू खत्री पंजाबियों ने कब्जा कर लिया और आज इसके अधिकतर डायरेक्टर हिन्दू खत्री पंजाबी हैं और इसमें वही छपता है जो वे चाहते हैं । इसके अतिरिक्त 'हरिभूमि' भी सिन्धु गोत्री हिन्दू जाटों का है जिसका अधिक प्रसारण गैर-जाट क्षेत्र मध्य प्रदेश में है । वैसे इसका प्रसारण रोहतक से भी है लेकिन जाटों ने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया ।

इसके बाद सन् 1980 के बाद टी.वी. मीडिया अर्थात् इलैक्ट्रोनिक भी जुड़ गया जो समाचार पत्र पत्रिकाओं से भी अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुआ । इसके स्वामी भी लगभग उसी वर्ग से हैं जो समाचार पत्र-पत्रिकाओं से हैं । इनकी आय का सबसे बड़ा साधन सरकारी विज्ञापन और निजी कम्पनियों के विज्ञापन हैं । वर्तमान में समाचार पत्रों अर्थात् मीडिया का पूर्णतया व्यवसायीकरण हो चुका है । ये लोग वही माल परोसते हैं जिसमें इनको पैसा मिलता है । इन्हें भारतीय संस्कृति या समाज के उत्थान से कोई लेना-देना नहीं है । जो पार्टी सत्ता में होती है उसकी जी भरकर जी-हजूरी करते हैं और ज्यों ही पार्टी सत्ता से दूर होती है तो उसकी बुराई और निकम्मापन प्रमाणित करने लगते हैं ।

जैसा रवैया ब्राह्मणवाद ने जाटों के विरोध में अपनाया था वही विरोध समाचार पत्र पत्रिकाओं में भी जारी रहा और उसी परम्परा को इलैक्ट्रोनिक मीडिया ने भी आगे बढ़ाया है । अभी कुछ हाल के वर्षों में जाटों व दलित व अन्य जातियों के लोग भी निचले स्तर पर इस मीडिया में आए हैं और वे सभी पूरी मेहनत करके निष्पक्ष रिपोर्टिंग कर रहे हैं । लेकिन ऊपरी स्तर पर उन्हीं पुरानी जातियों के मालिक और संपादक हैं जो अपनी मर्जी अनुसार इन समाचार पत्र-पत्रिकाओं व टी.वी. चैनलों पर प्रसारण करवाते हैं जो लगभग जाट विरोधी है । इसके लिए अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं । जब कोई भी खबर जाट विरोधी मिलती है तो उसे मुख्य पन्नों पर छपवा कर दबकर प्रचार किया जाता है लेकिन फिर भी मीडिया ने एक सहमति से जाटों को दबंग स्वीकार कर लिया है । इसीलिए जाट न लिखकर दबंग लोग लिखा जाता है ।

चौ० छोटूराम तथा मीडिया के बारे में आगे का लेख चौ० छोटूराम का हत्यारा कौन? में प्रमुखता से लिखा गया है । जब चौ० चरणसिंह देश के प्रधानमन्त्री बने तो इस मीडिया ने लिखा और कहा कि पहली बार भारत के प्रधानमन्त्री पिछड़ी जाति से बने हैं । लेकिन जब जाटों की पिछड़ी जाति में आरक्षण की बात आई तो किसी ने आरक्षण के लिए जाटों का समर्थन नहीं किया । इनका लिखने का उद्देश्य केवल उस समय चौ० चरणसिंह को छोटा दिखाना था लेकिन जाट कौम को फायदा करने का नहीं । इसके बाद सन् 1980 में मीडिया चौ० चरणसिंह के पीछे इतना पड़ गया कि उन्हें महत्त्वाकांक्षी कहने लगा और जब एक पत्रकार ने चौ० चरणसिंह से यहां तक प्रश्न किया कि वे प्रधानमन्त्री क्यों बनना चाहते हैं तो चौ० साहब ने इसके उत्तर में कहा, "जिस प्रकार आप पत्राकार से सम्पादक बनना चाहते हैं ।" इसी मीडिया के दुष्प्रचार के कारण तंग आकर चौ० साहब ने मजबूरन कहना पड़ा, काश ! मैं ब्राह्मण होता । यह कटु सत्य है कि इसी ब्राह्मणवादी मीडिया ने नेहरू और गांधी को इतिहास ने बना दिया जबकि उन्होंने कभी कोई इतिहास नहीं बनाया । पं० नरसिंहराव के प्रधानमन्त्री काल में एक पार्टी में एक पत्रकार वार्ता में पं० अटल बिहारी वाजपेयी रो पड़े थे । जब पत्रकार ने उनसे रोने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा था कि उनके सपने चकनाचूर हो गए और यह सपना उनका उस समय प्रधानमन्त्री बनने का था जो उस समय धूमिल हो गया था ।

लेकिन किसी पत्रकार या मीडिया ने पं० अटलबिहारी वाजपेयी को कभी महत्त्वाकांक्षी नहीं कहा और इसी मीडिया ने उनकी छवि को कितना सुन्दर बना दिया कि उन पर कई संगीन आरोप लगने पर तथा बार-बार बयान बदली करने की आदत के बावजूद भी उनको सर्वमान्य नेता बना दिया । जिस कारण वे आराम से अपना प्रधानमन्त्री काल पूर्णतया व्यतीत कर गए ।

आजादी के बाद जाटों के विरोध में एक सिलसिलेवार प्रचार चलता रहा जिसके परिणामस्वरूप आज दिल्ली और कुछ शहरों में जाटों को मकान किराए पर दिए जाने पर भी इनकार कर दिया जाता है और इल्जाम लगाया जाता है कि वे इस पर कब्जा कर लेंगे जबकि दिल्ली या इसके आसपास बनी सभी कालोनियां और अपार्टमैंट के फ्लैट्स आदि जाटों की जमीन पर ही बने हैं । यदि जाट ऐसे ही होते तो वे इस जमीन का कब्जा ही क्यों छोड़ते ? इसी प्रचार का प्रभाव है कि जाटों को सरेआम निजी संस्थाओं में नौकरियां नहीं दी जाती या फिर खदेड़ दिया जाता है । यह सब इसी मीडिया का ही प्रभाव है । वहीं दूसरी ओर न्यायाधीश अप्राकृतिक और गैर परम्पराओं के हक में अपने फैसले दे रहे हैं । उदाहरण के लिए दिल्ली के दो हिन्दू पंजाबी जजों ने भारतीय लड़कियों को होटलों व बारों में शराब परोसने को उचित ठहराया है तो दिल्ली हाईकोर्ट ने समलैंगिग सम्बन्धों को न्यायिक करार दिया लेकिन मीडिया ने इस पर कोई भी हो-हल्ला नहीं किया कि समलैंगिक रिश्तों से कौन-सा समाज बनता है और क्या उत्पत्ति होती है । इसी प्रकार अभिनेत्री खुशबू की इस घृणित दलील को कोर्ट ने मंजूरी दे दी कि विवाह के बगैर भी कोई लड़का-लड़की आपस में सम्बन्ध रख सकते हैं तो फिर विवाह और समाज का अर्थ क्या रह जाएगा? ये सभी पाश्विक सभ्यता को भारतीय सभ्यता पर थोपा जा रहा है । लेकिन जब उन्हें जाटों का 'ऑनर कीलिंग' का मामला हाथ लगा तो मीडिया ने तूफान खड़ा कर दिया जैसे कि हजारों लड़के-लड़कियां मारे गए यहां तक कि खाप पंचायतों पर सरेआम झूठा दोषारोपण किया गया कि वे 'ऑनर कीलिंग' करवा रहे हैं जबकि असलियत यह है कि आज तक किसी खाप व सर्वखाप ने किसी को मृत्युदण्ड तो क्या, एक डंडा मारने तक का भी फैसला नहीं सुनाया है । जबकि 'ऑनर कीलिंग' के लिए सीधे तौर पर 'हिन्दू विवाह अधिनियम', राजनैतिक नेता और मीडिया जिम्मेदार है क्योंकि हिन्दू कानून समगोत्री भाई बहनों को विवाह की इजाजत देता है तो सभी जानते हुए भी राजनेता इसके संशोधन पर विचार नहीं कर रहे और मीडिया एकदम झूठा प्रचार कर रहा है क्योंकि यह समझना होगा कि हिन्दू जाट कौम भारत ही नहीं पूरे संसार में सबसे बड़ी शाकाहारी कौम है जिस कारण वह जीव हत्या विरोधी है । लेकिन जाट कौम अपने शत्रु की हत्या से प्यार करती है । फिर ऐसे कौन-से कारण थे कि आज मां-बाप ने अपनी प्यारी और दुलारी संतानों को दुश्मन मान लिया है । इसका कारण केवल और केवल सामाजिक व्यवस्था के दबाव का परिवारों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव है जिसके जिम्मेदार ऊपर लिखित तीनों ही हैं । कौन नहीं जानता कि सूरपनखां की नाक क्यों कटी ? राम ने सीता को आग में क्यों झोंका ? पं० परशुराम ने अपनी मां की हत्या क्यों करा दी थी? इसका कारण केवल 'ऑनर' था अर्थात् ये ऑनर कब नहीं था? मीडिया आज अपने प्रचार से जाट कौम को एक विद्रोह की तरफ धकेल रहा है और जाट कौम को अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ने के अतिरिक्त दूसरा कोई रास्ता नहीं है । वर्तमान में मीडिया बनाम जाट का यह शीतयुद्ध चल रहा है और इसमें जाटों की जीत निश्चित है क्योंकि उनका पक्ष सच्चा है ।

कुछ जाट भाइयों को आमतौर पर कहते सुना जाता है कि हमें मीडिया से बनाकर रखनी चाहिए । पहली बात तो जाटों ने मीडिया से कब बिगाड़ी है? जाटों ने कब मीडिया के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा या विरोध किया? या उनके अखबार जलाए या उनके कार्यालय फूंके? सब कुछ होने के बाद भी जाटों ने ऐसा कभी कुछ नहीं किया और आज

तक सभी सहन करते आ रहे हैं । जो भाई मीडिया के साथ बनाने की कहते हैं उनको किसने बनाकर रखने से रोका है? वही मीडिया हमारे बच्चों को जो हमारी सामाजिक व्यवस्था के अनुसार बहिन भाई हैं, उनको प्रेमी युगल लिखकर जाट समाज को सरेआम गाली दे रहा है । अब यह देखना है कि जाट कौम कब तक गाली खाती रहेगी । यही मीडिया जो तालीबानी नाम से डरता रहा वही आज जाटों को तालीबानी लिख रहा है अर्थात् जाटों को तालिबानी बनने पर मजबूर कर रहा है । जब हजारों किलोमीटर दूर बैठे तालिबानी इस मीडिया और देश व संसार के लोगों के लिए खौफ हैं तो जब घर में ही तालिबानी बन जाएंगे तो फिर क्या होगा? यह सभी जानते हैं कि तालिबानी लड़ाकों ने संसार के सबसे ताकतवर देश और कई देशों की सेनाओं को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर रखा है । यदि जाट कौम वास्तव में तालिबानी बन गई तो कितने लोग इस देश में हैं जो इनकी तरफ आंख उठाकर देख पाएंगे ? इसलिए इस हकीकत पर जरा गौर किया जाएगा । मीडिया का जाटों के विरुद्ध प्रचार का आशय है कि जहां तक हो सके इनको बदनाम करो ताकि ये अधिकारों के बारे में सोच न पायें । उदाहरण के लिए आरक्षण व अपने उत्पादन की कीमत आदि ।

यह भी हकीकत है कि न्यायालय के फैसले सच्चे और झूठे गवाहों पर होते हैं और फैसले के बाद परिवारों की आपसी दुश्मनी कभी समाप्त नहीं होती जबकि खाप पंचायतों के फैसले न्याय पर आधारित होते हैं और खुले मैदानों में पारदर्शिता के आधार पर होते हैं जिससे उन परिवारों में सम्बन्ध भाईचारे के बन जाते हैं । इसलिए जाट कौम सरकारी न्यायालयों की बजाए अपने न्यायालयों पर अधिक विश्वास करती है । ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं जिसमें हत्याओं के मामलों में न्यायप्रिय फैसले किए हैं और वे समाज को मान्य हैं ।

इसलिए याद रहे समाज सरकार बनाता है और सरकार कानून बनाती है और कानून समाज की मान्यताओं की रक्षा करता है । लेकिन गलती से कोई समाज विरोधी कानून बन गया तो सरकार की जिम्मेदारी है कि उनमें तुरन्त संशोधन करे जिस प्रकार से संविधान में सैकड़ों संशोधन होते रहे हैं । आज तक का इतिहास बता रहा है कि मीडिया जाट विरोधी रहा है इसलिए हमने इस लेख के शीर्षक के सामने 36 का आंकड़ा लिख दिया है । यही इसका सार है।